JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तथ्य कई हैं, लेकिन सत्य एक ही हैं – टैगोर

–डॉ0 स्वतंत्र कुमार सोनी
(प्राचार्य)

प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम षाम तव नव तपोवने।
प्रथम प्रचारित तव नव भुवने, कत वेद काव्य काहिनी।।

गुरू रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1930)

सारांष

रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथानक ''तथ्य कई है, लेकिन सत्य एक ही है'', असाधारण वाक्य है, इस कथानक के चारों ओर अनेकों तथ्य, वास्तविकता, सत्यता, अचलता, निष्चियता, सिद्धांन्त, यथार्थता, अपरिवर्तनीयता, असलता, सन्दर्भ एवम् प्रमाणिकतो मानक के आधार पर चक्कर लगाते है, जिनके परिधि में षिक्षा, दर्षन व मूल्यों का दिषा बोध समाहित है, फिर भी सत्य का मार्ग तथ्यों से निकलता है। चाहे, साहित्य हो, या षिक्षा दर्षन। सत्य संसार की ही नहीं बल्कि प्राणी जगत की अद्वष्य षक्ति है, यही षक्ति भूत, वर्तमान, और भविश्य के लिय ऊर्जा संचित करती रहती है, जो कल्याण की भावना को हदय में बसाकर अभिव्यक्त होता है, जो न्याय, अनुरूप, सुखद् एवम् व्यवहारिक होता है। इसी का मूल अस्तित्व है, यही सर्वोच्चय है। इस प्रकार देखें तो कहा जा सकता है, कि सत्य एक ही है, जो ईष्वर का परम् रूप सत्य है। अर्थात सत्य ही ईष्वर, ईष्वर ही मनुश्य है।

प्रस्तावना

भारत 'आदित्य' और 'साहित्य' की अनुपम भूमि है। इस संपूर्ण धरा पर यदि कोई एक देष है जहाँ 'आदित्य' और 'साहित्य' की ईष इबादत के रूप में सजीव चित्रण किया जाता है। इनका अनन्त स्वर्णिम सूत्रों में भी पिरोया जाता है, जिसक षब्द–षब्द में समद्ध संस्कृति, अपार ज्ञान, विज्ञान, आत्मान्वेशण, मानवता, प्रकृतिवाद, प्रेम, सत्य, जीवन दर्षन इत्यादि क अविरल धाराओं से आप्लावित ईष्वरत्व का आनंदमयी रस स्फुटित होता है। जो गौरवषाली जीवन धारा की नीवं निर्मित करता है। इस सृश्टि के आदित्य रूप के पहल कवि भगवान श्री कृश्ण थ। जिन्होंने मार्गषीर्श मास के षुल्क पक्ष की एकादषी तिथि को भगवत् गीता के माध्यम से सजीव सस्वर कविता पाठ्य किया। उसके बाद साहित्य के क्षेत्र में विष्व कवि के रूप में माँ षारदा देवी के पुत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म बिटिष भारत के बंगाल प्रेसीडेंसी के कलकत्ता में 07 मई 1861 को हुआ।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर बचपन से ही कार्य के प्रति पूर्णता और समर्पण का भाव दैनिक कार्य षैली में दिखाई देता था। साहित्य साधना का तप करते रहते थे। उसी तप के समुद्र में डुबकर के विचार और चिंतन द्वारा अनन्त दृश्टिकोण से एक सृजनात्मक तथ्य को जन्म दे देते थे। हजारों तथ्यों के प्रकाषों को विभिन्न विधाओं द्वारा नव जागृत कर दिव्य ज्ञान का आवरण निर्मित करते थे परन्तु इन सबका एक ही सोत्र है, आत्मा–परमात्मा स परिचय होना। तभी रवीन्द्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के पुजारी थे, इसलिए कहा जा सकता है कि –

कुल सपूत जान्यों परै, लखि षुभ लच्छन गात।

होन हार विरवान के, होत चीकने पात।।

''प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ विषेश होता है जिसे वह मेरा धर्म करता है...

उसका धर्म क्या है ? जो उसके हदय में छिपा है और निरन्तर उसका निर्माण करता हैं।''

(रवीन्द्रनाथ टैगोर विन्टर द्वारा टैगोर के आत्म परिचय का अनुवाद विष्वभारती 023)

सत्य का उपकरण तथ्य

''अनुभव जन्म रूप से सत्यापित अवलोकन'' ही तथ्य का गठन करता है। ऐसी स्थितियाँ या परिस्थितियाँ है, जहाँ बहस के लिए कोई बध स्थान नहीं दिखता है। (गुड़ और हैट)

तथ्य (परिभाषा)

1. ऐसी वस्तु जिसकी वास्तविक सत्ता हो।

२. कोई घटना, गुण अथवा संबंध जिसकी वास्तविकता अनुभव में प्रकट हो या जिसका निश्चयात्मक रूप में अनुमान किया जा सके, विशेषकर देशकाल परिप्रेक्ष्य में घटी वास्तविक घटना (प्रत्यक्ष अनुभव) के वस्तुगत रूप में मूल अर्थ की दृष्टि से तथ्य सत्य से भिन्न होता है।

3. एक ऐसा भौतिक यथार्थ या व्यावहारिक अनुभव को कल्पना, अनुमान अथवा सिद्धांत से भिन्न होता है।

4. वस्तुनिष्ठ यथार्थ संयुत कोई भी सुनिश्चित अभिमत, कथन अथवा सूचना।

सत्य (परिभाषा)

1. चरित्र, कर्म और वाणीगत ईमानदारी, अनुभूति और विश्वासगत स्पष्टता।

2. ऐसी बात जो सत्य हो अथवा सत्य मानी जाती हो, यथा–

(क) घटनागत यथार्थ,

(ख) कोई स्थितिगत वात, जैसे– तथ्य।

3. (क) कोई तथ्य अथवा यथार्थगत निर्णय, प्रस्ताव, कथन अथवा विचार जो तर्क अथवा संबुद्धि के लिए आवश्यक हो अथवा स्थापित और अपेक्षित सत्य के पुष्ट तर्क द्वारा अनुकृत हो।

(ख) कोई सत्य–कथन एवं प्रस्ताव–माला। ऐसा सत्य–कथन और प्रस्ताव–माला जो किसी क्षेत्र द्वारा स्वीकृत की गई हो, जिसका अध्ययन किया गया हो अथवा जिसे सिद्ध किया गया हो।

शोध की प्रकृति 'सत्य' की प्रतिष्ठा करना है। सत्य के अनेक पहलू 'तथ्य' कहलाते हैं। सत्यान्वेषण के लिए तथ्यावगति अभीष्ट है। जिस प्रकार ईश्वर–शोधी जड़–चेतना के माध्यम से ईश्वर की खोज करता है उसी प्रकार शोधक तथ्यों के माध्यम से सत्य की गवेषणा करता है। तथ्य अनंत हैं। संबंध और सादृश्य पर अवलंबित होने से वे सापेक्ष हैं। तथ्यों की पारस्परिकता का ज्ञान ही किसी परिणाम पर पहुंचा सकता है। तथ्य लक्षण है और सत्य लक्ष्य । तथ्यों का संकलन अनुसंधान नहीं होता। जहां तथ्यों को ही लक्ष्य बना लिया जाता है वहां मूल लक्ष्य (सत्य) दृक्टपथ से ओझल हो जाता है।

तथ्यों से सत्य पर पहुंचना एक प्रक्रिया है। विविध तथ्यों के संबंध की वह व्याख्या, जो सत्यावगति का साधन होती है, शोध का आवश्यक अंग है। अतएव शोधक का शोध केवल तथ्य–संकलन से ही नहीं हो जाता, अपितु वह उनकी व्याख्या करता हुआ अपनी सत्य–निष्ठा से सत्याभिव्यक्ति करता है। किसी भी शोध–कार्य से हम सत्य की पूर्णाभिव्यक्ति की आशा नहीं कर सकते हैं, क्योंकि सत्य एक और असीम है। शोध का प्रयत्न उसके बड़े–से–बड़े अंश को देखना होना चाहिए। जो तथ्य इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हों, वस्तुतः वे ही संग्राह्य हैं। जा तथ्य सत्यावगति में बिल्कुल सहायक नहीं होते अथवा जिनका काम दूसरों से अच्छी तरह लिया जा सकता है, उनसे शोध–ग्रंथ को बोझिल बनाना समीचीन नहीं है। कभी–कभी ऐसे तथ्यों की आड़ में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य छिपकर रह जाते हैं। उनके संबंध में सावधान रहना चाहिए। तथ्यों की पुनरावृत्ति भी शोभनीय नहीं होती। उससे प्रस्तुतीकरण कलाहीन हो जाता है। तथ्य–संकलयिता न शोधक ही होता है और न आलोचक ही, वह केवल तथ्यवादी कहला सकता है। आजकल तथ्यवाद शोध–मार्ग में एक संक्रामक रोग की भांति फैल रहा है। इससे शोध–कार्य की मुक्ति होनी चाहिए अन्यथा शोधकों की स्थिति श्आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास जैसी बन जाएगी।

सत्य की खोज किसी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे व चर्च में नहीं पूवीग्रह, मत सिद्धांत व नियम में है। सत्य की कोई सीमा नहीं है नहीं इसे बन्धे जा सकता है। सत्य तो ना सेवा ही नारायण सेवा में ही यही आत्म निर्माण का पहला कदम है। मनुश्य अपना–अपना आत्म निर्माण करे तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है फिर मनुश्यों को स्वर्ग जाने की इच्छ करने की नहीं वरन देवताओं को पृथ्वी पर आने की आवष्यकता अनुभव होगीं दूसरों की सेवा महामता करना पुप्य है, पर अपनी सेवा करना इसमे भी बड़ा पुप्य है। अर्थात समग्र एवम् संपूर्ण जीवन में सत्य की कसौटी में खरा उतरने की कोषिष करते रहता चहिए यही आत्मबोध है। यही अलौकिक आनंद है।

''एक तथ्य पारंपरिक रूप से सच्चे प्रस्ताव का सांसारिक सह संबंध है।'' ऐसा कथन होता है जो वास्तक्कि के अनुमुल हो या जिसे साक्षम के प्रयोब द्वारा सवित किया जा किया जा सके। तथ्य की सच्चाई परखने के लिए उसके लिए प्रमाण प्रस्तुत कर जाते है जिसके लिए मान्स सन्दभों व सोतों का प्रमाणे करा जाता है। सत्य वर्तमान है। उसी में जीना चाहिए हम अवसर या तो गुजरे हुए दिनों की बातों में उलझे रहते है या भविश्य के सपने देखते है। इस तरह भूतया भविश्य काल में जीते है असल में दोनों काल निष्या है। वर्तमान ही सत्य है। उसी में जीना चहिए।

सत्य के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साक्ष्य

तथ्य कई है, लेकिन सच एक ही– सत्यम् षिवम् सुदरम् है टैगोर

'सत्य' ईष्वर	'सत्य' सौन्दर्य	'सत्य' नियामक	
'सत्य' प्रेम	'सत्य' ज्ञानबोध		'सत्य' निर्मेय
'सत्य' आनंद		'सत्य' सांस्कृति	'सत्य' संघर्श
'सत्य' प्रकृति	'सत्य' मार्ग	'सत्य' आगाज	'सत्य' निश्कर्श
'सत्य' आवाज	'सत्य' मन	'सत्य' अनन्त	'सत्य' कहानी
'सत्य' विचार	'सत्य' कर्म	'सत्य' सनातन	'सत्य' रवानी
'सत्य' साहित्य	'सत्य' वचन	'सत्य' भाव	'सत्य' सिद्वान्त
'सत्य' आदित्य	'सत्य' दर्षन	'सत्य' निष्छला	'सत्य' अनुसंधान
'सत्य' प्रार्थना	'सत्य' षिक्षा है	'सत्य' पवित्रता	'सत्य' ऊर्जा
'सत्य' आराधना	'सत्य' प्रकाष	'सत्य' अहिंसा	'सत्य' षक्ति
'सत्य' आत्मा	'सत्य' सेवा	'सत्य' प्रमाण	'सत्य' भक्ति
'सत्य' परमात्मा	'सत्य' नियम	'सत्य' प्रमेय	

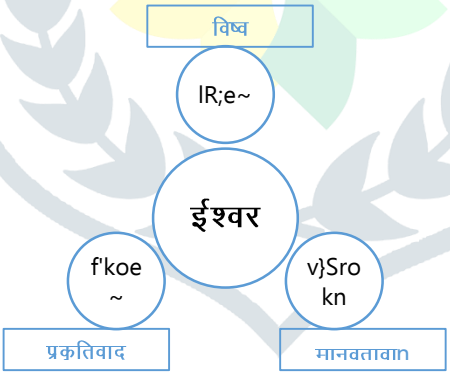

सच का अदृष्य रहस्य

सत्य एक है, अनेक नहीं। सत्य अनेक नहीं हो सकता है अनेक में एक ही सत्य की अभिव्यक्ति होती है। जैसे चंद्रमा एक होता है, परन्तु सरिता के हर जलकण में वह अलग–अलग दिखता प्रतोत होता है। अगर इस प्रतीत को कोई सत्य मान ले। तो आपकी अज्ञानता ही है। सत्य तो एक है परंतु उस तक पहुँचने के द्वार अनेक जरूर हो सकते हैं। अलग–अलग द्वार से वहाँ पहुँच जा सकता है जो द्वार के आकर्शण में उलझकर उसी के मोह में पड़ जाता है वह द्वार पर ही ठहर जाता है। ऐसे में सत्य की समीपता उसके लिए कभी भी नहीं होती है वरन दुर्लभ ही बनी रहती है।

जो आँखों से दिखता है वह इंद्रियजन्म सत्य हो, आँखों से जो दिखता हैं हमें उतना ही सत्य लगता है परन्तु जो नहीं दिखता, वह नहीं है, ऐसा नहीं है। सत्य तो इससे परे है। जैसे–जैसे इंद्रियों की सीमाओं को हम लाँघते जाते है। वैसे–वैसे सत्य प्रकट होने लगता है मन के धरातल पर यह और साफ दिखता है और जब मन की गरिमा को भी पार कर लिया जाता है तो सत्य और भी स्पश्ट दिखने लगता है यह तो ऐसा है जैसे दर्पण के ऊपर में जमो धूल को जितना साफ किया, जाए प्रतिविंब उतना ही साफ–साफ दिखता है यही सत्य टैगोर के साहित्य में परिलक्षित होता है। जो भविश्य के लिए अपरिर्वनीय, अखण्ड, अविभवित व सार्वभौमिक सत्य है। जो टैगोर की अतुलनीय अभिव्यक्ति है। जो अंतः करण को झकझोर देती है। यही गुरूदेव की मन से उपजा है। मनन् चिंतन करके ही वौद्विक सत्य को जन्म दिया है।

तथ्य का जीवंत उदाहरण तप

दीपक जलता है दूसरों को प्रकाश देने के लिए। सूर्य तपता है लोकों में जीवन फूंकने के लिए। गाय जंगल–जंगल घूमती है लोगों को दूध देने के लिए। प्रकृति ने यह तप उसे सहज ही बता रखा है।

जीवन के अपने ध्येय की पूर्ति के लिए कठोर तप की आवश्यकता पड़ती है। मानव जीवन का ध्येय आत्म–तोष प्राप्त करना है और इसकी प्राप्ति का उपाय मानवीय सामर्थ्य का विकास करना है। सामर्थ्य का विकास साधना से होता है और साधना तप के बिना पूरी नहीं होती। निरंतर साधना और परिश्रम ही तप है। किंतु तप के साथ ही त्याग का शब्द भी जुड़ा है। जो तप त्याग के लिए किया जाता है, वही तप है। तप के लिए तप करना, तप नहीं कहा जा सकता। उससे शारीरिक और मानसिक विकारों का प्रादुर्भाव होता है। उससे आत्म परितोष का उद्देश्य भी प्राप्त नहीं हो सकता। तप के साथ संग्रह का कोई स्थान नहीं है। दीपक जलता है दूसरों को प्रकाश देने के लिए। प्रकृति स्वयं ग्रीष्म में तपती है, धरती पर पावस के आगमन के लिए। सूर्य तपता है लोकों में जीवन फूंकने के लिए। गाय जंगल–जंगल घूमती है लोगों को दूध देने के लिए। प्रकृति ने यह तप उसे सहज ही बता रखा है। इसीलिए तो कहा गया है–सर्व लोक हिताय–सर्व जन सुखाय।

यही नियम मानव जीवन में भो लागू होता है। जीवन की तपस्या सर्व लोक हिताय–सर्व जन सुखाय हो, तभी वह तप की श्रेणी में आती है। एक व्यापारी अपने कारोबार को बढ़ाने के लिए दिन– रात कड़ी मेहनत करता है, एक मजदूर सुबह से शाम तक पसीना बहाता है। लेकिन इनकी तुलना में निःस्वार्थ भाव से संसार के कल्याण, की कामना करने वाले, सबको सन्मार्ग दिखाने वाले लोकसेवी कहीं ज्यादा पूजनीय माने गए हैं, क्योंकि त्याग की व्यापक भावना रखकर श्रम करना ही तप कहलाता है। दूसरे लोगों के हितार्थ, दूसरों की सेवा के लिए अपने शरीर पर कष्ट सहना, समष्टि के लाभ की चिंता रखते हुए कोई भी दृढ़ प्रयत्न करना तप कहलाता है। स्वार्थ के लिए या तप को लक्ष्य बनाकर किया गया संप आत्म संतुष्टि प्रदान नहीं करता। इससे जीवन में संतोष भी नहीं मिलता, बल्कि इससे अभिमान में वृद्धि होती है और मनुष्य विकारग्रस्त हो जाता है। विश्वामित्र को तप का अभिमान हुआ, जिससे उनका पतन हो गया। रावण के तप से उसकी समृद्धि बढ़ी, किंतु स्वार्थ भाव के कारण उसका पतन हो गया। महात्मा बुद्ध ने अपने महलों के सारे सुख–वैभव त्याग दिए थे। जंगल में जाकर तप किया। फिर लोक कल्याण के लिए उन्होंने अपने तपस्वी, एकाकी जीवन का त्याग किया, तब उन्हें आत्म–तोष प्राप्त हुआ। उन्होंने तप और त्याग दोनों ही लोक कल्याण के लिए किया। जड़ अथवा जीव जगत के सभी पदार्थ विश्व की विकास यात्रा में अपना योगदान दे रहे हैं। यही बात मनुष्य पर लागू होती है।

सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने की वजह से मनुष्य की जिम्मदारी तो और बढ़ जाती है। जो मनुष्य इसे जीवन में स्थान देकर समष्टि के लिए अपना उत्सर्ग करते हैं, उनके विकार स्वतः ही धुलने लगते हैं और उन्हें नवीन जीवन शक्ति, स्फूर्ति, सामर्थ्य प्राप्त होती है।

सभी प्रकार के अभिमान का छौड़कर अपनी उपलब्धियों का उत्सर्ग करते रहना ही सच्चा त्याग है। दूसरों के कल्याण के लिए स्वयं कष्ट संहना, शरीर और मन का उपयोग करना, दूसरों की सेवा में लगना, अपने सुख–भोग, स्वार्थ आदि में मन को न जाने देना ही तप है। महाराज जनक, सम्राट अशोक, बुद्ध, महात्मा गांधी इसी श्रेणी में आते हैं। भगवान राम का जीवन तप और त्याग की सजीव व्याख्या है।

मैं तुम्हारी सौगंध खाकर कहता हूँ,
कि यदि अपनी तपस्या के बल पर,
नवीन हदय में कोई नवीन संसार न गढ़ सका,
यदि वीणा के तारों को झंकृत करके,
किसी के मर्म तक न पहुँच सका,
किसी नई आँख के इंगित को न पहचान सका,
तो मैं तपस्वी नहीं बनूँगा,
उस तपस्वी को पाए बिना,
मैं तपस्वी नहीं बनूँगा।

संख्याएँ भी सत्य की पहेली का हिस्सा

यदि हमें संख्याओं कि विज्ञान में एक नजर डाले तो संख्याएँ भी ईष्वर की भाशा के षब्द है। क्योंकि संख्याओं में भी ईष्वर रहस्य की कुंजी है। या यूँ ही कहे–

सत्य के आधार, आदि और अंत,
कर्म के आधार, मर्म ही स्वतंत्र।।

इस तथ्य की षुरूआत हम संख्याओं की षक्ति से कर सकते है ये जो संख्याएँ है, वे अमूर्त न होकर ब्रह्मांड के छोटे–छोटे टुकड़े है। उनके अनुपात और रिष्तों में सत्य का रहस्य छिपा है अर्थात ब्रह्मांड को जान सकते है इनमें ग्रहों की गति और संगीत के साथ ही हमारे अपने जीवन की लय छिपी है। एकवृत्त का सही अनुपात, संगीत अंतराल का सामंजस्य, ज्यामितीय आकृतियों की सुंदरता क्या है? ये सभी अंतर्निहित संख्यात्मक वास्तविकता के प्रमाण है। इन रिष्तों का अध्ययन करके हम ईष्वरीय भाशा को समझना षुरू करते है, वह कोड जो पूरे अस्तित्व को नियंत्रित करता है यही समझ हमें गहन सत्य की ओर ले जाती है।

निश्कर्श

रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथानक ''तथ्य कई है, लेकिन सत्य एक ही है'', असाधारण वाक्य है, इस कथानक के चारों ओर अनेकों तथ्य, वास्तविकता, सत्यता, अचलता, निष्चियता, सिद्धांन्त, यथार्थता, अपरिवर्तनीयता, असलता, सन्दर्भ एवम् प्रमाणिकता मानक के आधार पर चक्कर लगाते है, जिनके परिधि में षिक्षा, दर्षन व मूल्यों का दिषा बोध समाहित है, फिर भी सत्य का मार्ग तथ्यों से निकलता है। चाहे, साहित्य हो, या षिक्षा दर्षन। सत्य संसार की ही नहीं बल्कि प्राणी

जगत की अदृष्य षक्ति है, यही षक्ति भूत, वर्तमान, और भविश्य के लिय ऊर्जा संचित करती रहती है, जो कल्याण की भावना को हृदय में बसाकर अभिव्यक्त होता है, जो न्याय, अनुरूप, सुखद् एवम् व्यवहारिक होता है। इसी का मूल अस्तित्व है, यही सर्वोच्चय है। इस प्रकार देखें तो कहा जा सकता है, कि सत्य एक ही है, जो ईष्वर का परम् रूप सत्य है। अर्थात सत्य ही ईष्वर, ईष्वर ही मनुश्य है।

अन्त में रवीन्द्रनाथ टैगोर सार्वभौमिक सत्य की ओर इषारा करते हुए कहते है कि –

जानता हू,

संसार की रंग भूमि को छोड़कर

मैं जब चला जाऊँगा

प्रत्येक त्रतु में फ्लों के व

न साक्ष्म भरेंगे

कि इस संसार को मैंने प्यार किया था

यह प्यार करना ही सत्य है,

यही इस जीवन का धन है।

विदा लेते समय

यह सत्य, अम्लान रहकर

मृत्यु को अस्वीकार करेगा।

संदर्भ सूची

पुस्तक :– रवीन्द्रनाथ की कविताएँ (पृश्ठ– 197, 310)

राधाकृश्णन, एस० रविन्द्रनाथ टैगोर का दर्षन लंदन मैक मिलन 1919

टैगोर रविन्द्रनाथ साधना जीवन का बोध प्रथम संस्करण 1913 लंदन मैकमिलन

द रिलिजन ऑफ मैन

अखण्ड ज्योति जनवरी 2022 पेज– 21

अखण्ड ज्योति जनवरी 2018 पेज– 31